'विचारों की लड़ाई से ही क्रांति का सूत्रपात होता है'

सांची विवि में याद करो कुर्बानी लेक्चर सीरीज आयोजित

रायसेन। नवदुनिया न्यूज

विचारों की लड़ाई से ही क्रांति का सूत्रपात होता है। किसी संस्कृति के समापन की शुरूआत भाषा और विचारों के अंत से होती है। कुछ ऐसी ही खास बातें सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में **याद करो कुर्बानी** व्याख्यानमाला में शनिवार को विद्वानों की चर्चा में निकलकर आई।

भारतीय आजादी का सतत संघर्ष पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री एवं लोकमान्य तिलक का स्वाधीनता का विचार पर मुंबई विश्वविद्यालय की प्रो. शुभदा जोशी के व्याख्यान हुए। भारतीय आजादी के सतत संघर्ष पर बोलते हुए प्रो कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि भारत की सीमाएं प्राकृतिक है ना कि आदमी द्वारा बनाई हुई। उन्होंने कहा कि भारत पर संपूर्ण रुप से कभी भी किसी शासक का कब्जा नहीं रहा।

प्रो अग्निहोत्री ने कहा कि दुर्भाग्य से सिर्फ अंग्रेजों से संघर्ष की बात होती है, अन्य विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ाई और विजय की बात नहीं होती। उन्होंने

प्रो. शुभदा जोशी।

कुलदीप चंद अग्निहोत्री।

इतिहास को सही ढंग से जानने की आवश्यकता जताते हुए कहा कि ऐसा नहीं होने पर हम अपने स्वतंत्रताकारियों के बलिदान से न्याय नहीं कर पाएंगे। प्रो अग्निहोत्री के मुताबिक इतिहास को सही रुप से जानना मौजूदा वक्त की आवश्यकता है।

अतिथि बोले- ज्ञान का संचयन और संरक्षण आवश्यक

सत्र के दूसरे व्याख्यान में लोकमान्य तिलक का स्वाधीनता का विचार पर बोलते हुए मुंबई यूनिवर्सिटी की प्रो शुभदा जोशी ने कहा कि विचारों की लड़ाई से ही किसी क्रांति का सूत्रपात होता है। उन्होंने कहा कि संस्कृति के समापन की शुरुआत भाषा एवं विचारों के अंत से होती है अत: ज्ञान का संचयन एवं संरक्षण आवश्यक है। इसीलिए बाल गंगाधर तिलक ने विचारों के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध सामाजिक चेतना जागृत की। तिलक के मुताबिक अंग्रेजों ने हमें संस्कृत एवं संस्कृति से दूर रखने का भरसक प्रयास किया ताकि हमारे विचारों का पतन हो सके। प्रो जोशी के मुताबिक तिलक ने शैक्षणिक संस्थानों के जरिए विचार परिवर्तन की शुरुआत की।

उन्होंने केसरी और मराठा समाचार अखबारों के जरिए जन चेतना एवं समाज सुधार की संकल्पना को साकार किया। प्रो जोशी ने बताया कि बालगंगाधर तिलक ने मराठी समाज में भी आत्म सम्मान का भाव जागृत करने की दिशा में काम किया। सभा की अध्यक्षता करते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. डॉ.यज्ञेश्वर शास्त्री ने अध्यक्षीय उदबोधन दिया। व्याख्यान में पधारे अतिथियों को स्वागत उदबोधन प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने किया वहीं वक्ताओं का आभार प्रो नवीन मेहता ने माना। कार्यक्रम का संचालन प्रो प्रभाकर पांडे द्वारा किया गया। लेक्चर सीरीज में 21 अगस्त को हिंदुत्व में स्वाधीनता के विचार और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष, विभाजन और कांग्रेस की भूमिका पर व्याख्यान होंगे।

भोजपाल
स्वदेश भोपाल, 18 अगस्त 2016 5

व्याख्यान | राष्ट्रीयता और संस्कृति एवं भारत की वैश्विक जिम्मेदारी पर व्याख्यान

हमें संस्कृति की जड़ों की ओर लौटना होगा

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला के दूसरे दिन भारत की आजादी और वैश्विक जिम्मेदारी पर प्रो. अनंत गिरी एवं राष्ट्रीयता और संस्कृति पर प्रो विजय बहादुर सिंह ने व्याख्यान दिया। भारत की आजादी और वैश्विक जिम्मेदारी पर बोलते हुए प्रो विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटना होगा जो कि हम भूलते जा रहे हैं। भारत की विस्तृत एवं गौरवशाली परंपरा में ही स्वाधीनता, स्वतंत्रता और स्वराज का मूल है जिसे हमें फिर से अपनाने की जरुरत है। प्रो सिंह ने धर्म और राष्ट्रीयता में भेद समझाते हुए कहा कि धर्म व्यक्ति विशेष का चुनाव हो सकता है जबकि राष्ट्रीयता उस देश में रहने वाले तमाम लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। राष्ट्रीयता किसी राष्ट्र की आत्मा है और देश बचेगा तभी राष्ट्रीयता भी बची रह सकेगी। प्रो सिंह ने कहा कि आज की चुनौतियों से निबटने के लिए हमें महानायक की नहीं अपितु महापुरूष की आवश्यकता है।

दूसरे व्याख्यान में भारतीय स्वतंत्रता और वैश्विक जिम्मेदारी पर बोलते हुए प्रो अनंत गिरी ने वैश्विक परिदृष्य में भारत की चुनौतियों और संभावनाओं पर बात की। उन्होंने वैश्विक न्याय की धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि मौजूदा दौर में गैरबराबरी को खत्म किए बिना सही अर्थों में स्वाधीनता नहीं होगी। प्रो गिरी ने राष्ट्रवाद की परिकल्पना को विभिन्न परंपराओं का समन्वित रूप बताया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रो गिरी ने उस दौर के वैश्विक परिदृष्य और मौजूदा परिप्रेक्ष्य से जोड़कर रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया।

अंतर्राष्ट्रीय नीति का अध्ययन

सभा की अध्यक्षता कर रहे सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. डॉ. यज्ञेश्वर शास्त्री ने मौजूदा दौर की चुनौतियों एवं भविष्य की जिम्मेदारी के लिए सांची विश्वविद्यालय को समाधान उपलब्ध कराने की दिशा में बढ़ने का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि सांची विवि अंतर्राष्ट्रीय नीति अध्ययन की दिशा में भी काम करेगा। व्याख्यान में पधारे अतिथियों का स्वागत प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने किया वहीं वक्ताओं का आभार प्रो रमेश रोहित ने प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो नवीन मेहता द्वारा किया गया। लेक्चर सीरीज में अगला व्याख्यान 19 अगस्त को स्वराज की दार्शनिक विवेचना और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्यात्मिक आधार पर व्याख्यान होंगे।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, गुरुवार, 18 अगस्त 2016

संबोधन | सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में याद करो कुर्बानी के तहत हुई व्याख्यानमाला

भारत की विस्तृत एवं गौरवशाली परंपरा है: अनंत गिरी

निज संवाददाता

रायसेन, 17 अगस्त। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला के दूसरे दिन भारत की आजादी और वैश्विक जिम्मेदारी पर प्रो.अनंत गिरी एवं राष्ट्रीयता और संस्कृति पर प्रो विजय बहादुर सिंह ने व्याख्यान दिया। भारत की आजादी और वैश्विक जिम्मेदारी पर बोलते हुए प्रो विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटना होगा जो कि हम भूलते जा रहे हैं।

भारत की विस्तृत एवं गौरवशाली परंपरा में ही स्वाधीनता स्वतंत्रता और स्वराज का मूल है जिसे हमें फिर से अपनाने की जरुरत है। प्रो सिंह ने धर्म और राष्ट्रीयता में भेद समझाते हुए कहा कि धर्म व्यक्ति विशेष का चुनाव हो सकता है जबकि राष्ट्रीयता उस देश में रहने वाले तमाम लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। राष्ट्रीयता किसी राष्ट्र की आत्मा है और देश बचेगा तभी राष्ट्रीयता भी बची रह सकेगी। प्रो सिंह ने कहा कि आज की चुनौतियों से निबटने के लिए हमें महानायक की नहीं अपितु महापुरूष की आवश्यकता है।

दूसरे व्याख्यान में भारतीय स्वतंत्रता और वैश्विक जिम्मेदारी पर बोलते हुए प्रो अनंत गिरी ने वैश्विक परिदृष्य में भारत की चुनौतियों और संभावनाओं पर बात की। उन्होंने वैश्विक न्याय की धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि मौजूदा दौर में गैरबराबरी को खत्म किए बिना सही अर्थों में स्वाधीनता नहीं होगी। प्रो गिरी ने राष्ट्रवाद की परिकल्पना को विभिन्न परंपराओं का समन्वित रूप बताया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रो गिरी ने उस दौर के वैश्विक परिदृष्य और मौजूदा परिप्रेक्ष्य से जोड़कर रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया।

सभा की अध्यक्षता कर रहे सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. डॉ. यज्ञेश्वर शास्त्री ने मौजूदा दौर की चुनौतियों एवं भविष्य की जिम्मेदारी के लिए सांची विश्वविद्यालय को समाधान उपलब्ध कराने की दिशा में बढ़ने का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि सांची विवि अंतर्राष्ट्रीय नीति अध्ययन की दिशा में भी काम करेगा। व्याख्यान में पधारे अतिथियों का स्वागत प्रोण् वैद्यनाथ लाभ ने किया वहीं वक्ताओं का आभार प्रो रमेश रोहित ने प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो नवीन मेहता द्वारा किया गया।

दैनिक ब्लिट्ज टुडे

भोपाल, बुधवार 17 अगस्त 2016 08

सांची विवि में याद करो कुर्बानी लेक्चर सीरीज शुरू

भोपाल। आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का मंगलवार को शुभारंभ हुआ। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृंखला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रो. रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर बोलते हुए कहा कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा के रास्ते छोटे-छोटे आंदोलन से पहले देश के जनमानस को तैयार किया और फिर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया। उन्होने कहा कि देश आजाद जरूर हो गया लेकिन गांधीजी जिन 2 मुद्दों पर जोर देते थे वो बरकरार है। प्रो सिंह ने कहा कि गरीबी और बेकारी के साथ गैर बराबरी की समस्या दूर होने पर ही भारत सच्चे अर्थों में स्वाधीन होगा। राज्यसभा सदस्य रह चुके प्रो सिंह ने कहा कि गांधीजी एक गुप्त प्रस्ताव लेकर पाकिस्तान जाना चाहते थे। उस प्रस्ताव में दोनों देशों में कभी भी युद्ध ना करने और अपने अपने देश के अल्पसंख्यकों की रक्षा करना राज्य का जिम्मा होने की बात थी लेकिन वो कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होने छात्रों से आह्वान किया कि गांधी को समझना है तो उनका साहित्य पढ़े ना कि सुनी-सुनाई बातों पर अपना मत बनाए। प्रो रामजी सिंह ने कहा कि गांधीजी के पूरे दर्शन को समझने के लिए एक ही किताब पढ़ी जानी चाहिए और वो है हिंद स्वराज।

देशबन्धु भोपाल, बुधवार 17 अगस्त, 2016

व्याख्यानमाला का शुभारंभ

रायसेन, देशबन्धु। आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का आज शुभारंभ हुआ। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृंखला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रो. रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर बोलते हुए कहा कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है। उन्होने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा के रास्ते छोटे-छोटे आंदोलन से पहले देश की जनता का मानस तैयार किया और फिर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया। उन्होने कहा कि देश आजाद जरुर हो गया लेकिन गांधीजी जिन 2 मुद्दों पर जोर देते थे वो बरकरार है। प्रो सिंह ने कहा कि गरीबी और बेकारी के साथ गैर बराबरी की समस्या दूर होने पर ही भारत सच्चे अर्थों में स्वाधीन होगा। राज्यसभा सदस्य रह चुके प्रो सिंह ने कहा कि गांधीजी एक गुप्त प्रस्ताव लेकर पाकिस्तान जाना चाहते थे। उस प्रस्ताव में दोनों देशों में कभी भी युद्ध ना करने और अपने अपने देश के अल्पसंख्यकों की रक्षा करना राज्य का जिम्मा होने की बात थी लेकिन वो कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होने छात्रों से आव्हान किया कि गांधी को समझना है तो उनका साहित्य पढ़े ना कि सुनी-सुनाई बातों पर अपना मत बनाए।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, बुधवार, 17 अगस्त 2016

सांची विवि में याद करो कुर्बानी लेक्चर सीरीज

रायसेन। आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का आज शुभारंभ हुआ। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृंखला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रो. रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर बोलते हुए कहा कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है। उन्होने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा के रास्ते छोटे-छोटे आंदोलन से पहले देश की जनता का मानस तैयार किया और फिर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने दिया वहीं वक्ताओं का आभार प्रो नवीन मेहता ने प्रकट किया।

दैनिक दबंग दुनिया

भोपाल, बुधवार, 17 अगस्त 2016

व्याख्यानमाला का शुभारंभ

भोपाल। आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का शुभारंभ मंगलवार को किया गया। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृंखला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रो. रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है।

मध्य स्वर्णिम

भोपाल, बुधवार 17 अगस्त 2016 02

सांची विवि में याद करो कुर्बानी लेक्चर सीरीज

स्वराज के वैदिक परिप्रेक्ष्य और गांधी विचारधारा में स्वराज पर व्याख्यान

संवाददाता, रायसेन

आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध. भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का आज शुभारंभ हुआ। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृखंला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रोण् रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर बोलते हुए कहा कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है। उन्होने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा के रास्ते छोटे.छोटे आंदोलन से पहले देश की जनता का मानस तैयार किया और फिर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया। उन्होने कहा कि देश आजाद जरुर हो गया लेकिन गांधीजी जिन 2 मुद्दों पर जोर देते थे वो बरकरार है। प्रो सिंह ने कहा कि गरीबी और बेकारी के साथ गैर बराबरी की समस्या दूर होने पर ही भारत सच्चे अर्थों में स्वाधीन होगा। राज्यसभा सदस्य रह चुके प्रो सिंह ने कहा कि गांधीजी एक गुप्त प्रस्ताव लेकर पाकिस्तान जाना चाहते थे। उस प्रस्ताव में दोनों देशों में कभी भी युद्ध ना करने और अपने अपने देश के अल्पसंख्यकों की रक्षा करना राज्य का जिम्मा होने की बात थी लेकिन वो कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होने छात्रों से आव्हान किया कि गांधी को समझना है तो उनका साहित्य पढ़े ना कि सुनी.सुनाई बातों पर अपना मत बनाए। प्रो रामजी सिंह ने कहा कि गांधीजी के पूरे दर्शन को समझने के लिए एक ही किताब पढ़ी जानी चाहिए और वो है हिंद स्वराज। सत्र का दूसरा व्याख्यान वैदिक साहित्य में स्वाधीनता की अवधारणा पर प्रोण् वैंकटप्रसन्न चतुर्वेदी स्वामी ने दिया। सुदर्शन पीठ के प्रमुख स्वामी ने कहा कि स्वाधीनता नियमबद्ध है और उसके साथ कई तरह के सत्यए प्रकारए विकार एवं अपाय सम्मिलित है। उन्होने कहा कि वेदों में राजा और प्रजा के कर्तव्य और अधिकार की सुस्पष्ट व्याख्या है। राजा को प्रेमबद्धए करुणाबद्ध और गौरव बद्ध होकर शासन करना चाहिए वहीं प्रजा के पास निरीक्षणए परीक्षणए प्रश्नए आक्षेपए नियमन एवं संघर्ष के अधिकार है जिसके जरिए वो राजा को कर्तव्यों के प्रति सचेत कर सकती है। प्रो स्वामी ने कहा कि अध्यापकए संतात्माए माता.पिताए राजा और गुरु के पास ही कल्याण कर सकने की क्षमता होती है। स्वामीजी ने कहा कि समग्र राष्ट्र कल्याण के लिए प्रक्रिया और प्रार्थना का समुचित उपयोग करना होगा। सभा की अध्यक्षता कर रहे सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रोण् डॉण् यज्नेश्वर शास्त्री ने कहा कि गांधीजी ने सत्य और सत्याग्रह के जरिये देश को आजादी दिलाई। हमारा कर्तव्य है कि हम देशए समाज और संस्कृति के प्रति अपना उत्तरदायित्व जिम्मेदारी से पूरा करें।

भारत में गरीबी और बेकारी दूर हो

स्वराज के वैदिक परिप्रेक्ष्य और गांधी विचारधारा में स्वराज पर बोले विद्वान

रायसेन(ब्यूरो)। आजादी के 70 वर्ष पर सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का मंगलवार को बारला अकादमिक परिसर में शुभारंभ हुआ। 23 अगस्त तक चलने वाली व्याख्यान श्रृखंला में प्रमुख गांधीवादी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे प्रो. रामजी सिंह ने गांधीजी के मुताबिक स्वाधीनता विषय पर बोलते हुए कहा कि गांधी विचारधारा भारतीय संस्कृति और वाग्मय का नवनीत है। उन्होने कहा कि गांधीजी ने अहिंसा के रास्ते छोटे–छोटे आंदोलन से पहले देश की जनता का मानस तैयार किया और फिर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया। उन्होने कहा कि देश आजाद जरुर हो गया लेकिन गांधीजी जिन 2 मुद्दों पर जोर देते थे वो बरकरार है।

प्रो सिंह ने कहा कि गरीबी और बेकारी के साथ गैर बराबरी की समस्या दूर होने पर ही भारत सही अर्थों में स्वाधीन होगा। राज्यसभा सदस्य रह चुके प्रो सिंह ने कहा कि गांधीजी एक गुप्त प्रस्ताव लेकर पाकिस्तान जाना चाहते थे। उस प्रस्ताव में दोनों देशों में कभी भी युद्ध ना करने और अपने अपने देश के अल्पसंख्यकों की रक्षा करना राज्य का जिम्मा होने की बात थी लेकिन वो कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होने छात्रों से आह्वान किया कि गांधी को समझना है तो उनका साहित्य पढ़े ना कि सुनी–सुनाई बातों पर अपना मत बनाए। प्रो रामजी सिंह ने कहा कि गांधीजी के पूरे दर्शन को समझने के लिए एक ही किताब पढ़ी जानी चाहिए और वो है हिंद स्वराज।

सांची। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि।

सत्र का दूसरा व्याख्यान वैदिक साहित्य में स्वाधीनता की अवधारणा पर प्रो. वैंकटप्रसन्न चतुर्वेदी स्वामी ने दिया। सुदर्शन पीठ के प्रमुख स्वामी ने कहा कि स्वाधीनता नियमबद्ध है और उसके साथ कई तरह के सत्य, प्रकार, विकार एवं अपाय सम्मिलित है। उन्होने कहा कि वेदों में राजा और प्रजा के कर्तव्य और अधिकार की सुस्पष्ट व्याख्या है। राजा को प्रेमबद्ध, करुणाबद्ध और गौरव बद्ध होकर शासन करना चाहिए वहीं प्रजा के पास निरीक्षण, परीक्षण, प्रश्न, आक्षेप, नियमन एवं संघर्ष के अधिकार हैं।

एक साल पहले असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए पात्र उम्मीदवार इस साल अपात्र

विज्ञापन में आयु की गणना 2017 से करने पर तीन हजार की आयु 45 साल पार

एजुकेशन रिपोर्टर | भोपाल

मप्र लोक सेवा आयोग द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर के 2371 खाली पदों पर भर्ती के लिए आयोजित की जाने वाली परीक्षा से पहले एक नया विवाद जुड़ गया है। आयोग द्वारा 2015 में जारी पहले विज्ञापन में जो उम्मीदवार पात्र थे वे 2016 में जारी विज्ञापन में अपात्र हो गए हैं। इसका कारण उम्मीदवारों के 45 साल की आयु को पार कर जाना है। करीब 3000 उम्मीदवार ऐसे हैं जो 2015 में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद के लिए पात्र थे लेकिन परीक्षा निरस्त होने के बाद अब आयु की गणना के हिसाब से अपात्र हो गए हैं।

इन उम्मीदवारों को आयु के हिसाब से पात्र होने के लिए एक और मौका सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के लिए लागू नियमों में नजर आया है। उम्मीदवार सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति के लिए अधिकतम आयु सीमा के बंधन को समाप्त कर योग्यता के आधार पर करने के फैसले को अपने लिए एक आखिरी अवसर के रूप में देख रहे हैं। इसी आधार पर अब मांग की जा रही है कि आयोग द्वारा परीक्षा निरस्त करने के कारण आयु सीमा पार कर चुके उम्मीदवारों को एक और मौका दिया जाना चाहिए। उम्मीदवारों ने सीएम हेल्पलाइन में इसका सुझाव दिया है। हालांकि अभी तक इस संबंध में सरकार की ओर से कोई पहल नहीं की गई है।

सभी नेट, स्लेट व पीएचडीधारी

असिस्टेंट प्रोफेसर के पदों के लिए 27 अगस्त से शुरू होने जा रही परीक्षा से अपात्र हुए उम्मीदवार रवि मिश्रा का कहना है कि 2015 में आयोग द्वारा जारी विज्ञापन के अनुसार करीब तीन हजार आवेदक आयु सीमा के लिहाज से पात्र थे। लेकिन मामला हाईकोर्ट में जाने के बाद आयोग ने इस परीक्षा को ही निरस्त कर दिया था। इसके बाद जो 2016 में नया विज्ञापन जारी हुआ उसमें उच्च शिक्षा विभाग ने आयु की गणना 1 जनवरी 2017 से ही है। उधर, आयोग के सचिव मनोहर दुबे का कहना है कि पदों पर भर्ती के नियम उच्च शिक्षा विभाग ने बनाए हैं। इसमें आयोग कुछ नहीं कर सकता।